"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: February 2024 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

बावरी समाज के लोक देवता व लोक देवियां का संस्कृति व समाज पर प्रभाव

श्रीराम पंवार, शोधार्थी जे.जे.टी. विश्वविद्यालय, झुंझुनू, राजस्थान

शोध–सार

बावरी समाज की संस्कृति एक जीवंत परंपरा है जो प्रकृति, लोक आस्था, और पारंपरिक ज्ञान से गहराई से जुड़ी हुई है। बदलते समय के साथ इनके जीवन में आधुनिकता का प्रभाव जरूर पड़ा है, परंतु उनकी सांस्कृतिक पहचान अब भी सजीव है। आवश्यकता है कि इस समाज की सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित किया जाए और उन्हें सामाजिक रूप से सशक्त किया जाए। बावरी समाज की संस्कृति और लोक परंपरा भारत की विविधता में एक महत्वपूर्ण योगदान है। यद्यपि आज यह समाज अनेक सामाजिक–आर्थिक समस्याओं से जूझ रहा है, फिर भी इसकी सांस्कृतिक पहचान जीवंत और प्रेरणादायक है। आवश्यकता है कि इस समाज के पारंपरिक ज्ञान को संरक्षित किया जाए और उन्हें शिक्षा, रोजगार व स्वास्थ्य के अवसर प्रदान कर मुख्यधारा में जोड़ा जाए।

परिचयः–

भारत एक विशाल देश हैं, और इस देश में जाति व्यवस्था सदियों से चली आ रही है, इस जाति व्यवस्था के गुणों के साथ–साथ अवगुण भी हैं। इस जाति व्यवस्था में ऊँच–नीच छूत–अछूत आदि जन्म से ही दुष्परिणाम है। भारत देश में जन्म लेने वाला प्रत्येक नागरिक जाति के बन्धनों में जकड़ा हुआ है, सभी मनुष्य जन्म से तो स्वतंत्र है लेकिन समाज द्वारा बनाऐ गऐ नियमों पर उसे चलना पड़ता है, भारतीय संविधान के अनुसार किसी भी भारतीय नागरिक को नस्ल, जाति, वर्ण, लिंग, भाषा, धर्म के आधार पर भेदभाव नही किया जा सकता, परन्तु यह केवल संविधान में लिखा है। वास्तविकता इससे परे है।

भारत में आज भी हजारों ऐसी जातियां व जनजातियां है जिसे अपने अधिकारों का ज्ञान नहीं है, इन्हे अछूत कहकर समाज की मुख्य धारा से अलग कर दिया जाता हैं। अपने अधिकारो के लिए इन्हे लडना पडता है समाज की मुख्य धारा मे शामिल होने के लिए इन्हे दुसरी जातियो से अपने अधिकारो के लिए समय समय पर सरकार को यह बताना पडता है कि जाति वर्ण के आधार पर भेदभाव नही किया जाता है आज भी सैकडों ऐसी जातिया व जनजातिया है जिन्हे अपने अधिकारो का कुछ भी पता नही है कुछेक ऐसी आदिम जनजातिया है जो समाज की मुख्य धारा से बिल्कुल कट चुकी है इन आदिम जनजातियो के अपने रीति रिवाज व सांस्कृतिक विशेषताऐ है। भारतीय सविधान और अपने अधिकारो का कुछ भी ज्ञान इन आदिम जनजातियो को नही है।

साहित्य का पुनरावलोकन :–

- **दिपाली व कुमार मनोज (2009)** झारखण्ड की जनजातिय लोक चित्रकला के अध्ययन में बताया कि मानवीय संस्कृति और कला के उद्‌भव और के विकास के साथ ही जुड़ी हुई हैं, ऐतिहासिक तथ्यो की और ध्यान दे तो स्पष्ट रूप से यह अनुमान लगाया जा सकता है कि हमारी आदिम अवस्था में जब मनुष्य के पास न तो कोई अक्षर ज्ञान तब शायद अंगुलियों के माध्यम से ही मनुष्य ने बालू पत्थर आदि पर कुछ चिन्ह बनाना शुरू किया होगा।
- **पाण्डेय नीलिमा (2012)** "दलित विजंस" में बताया कि यह पुस्तक एक ऐसा प्रयास है कि जो हमारी स्थापित मान्यताओं, धारणाओं और नजरिये पर पुनर्विचार करने के लिऐ हमें प्रेरित करेगा, साथ ही इतिहास की हमारी संकल्पना को पुनरीक्षीत करने के लिए हमें बाध्य करेगा।
- **मौर्य कुमार मनोज (2012)** "सहरिया जनजाति : अस्तित्व का संकट" मे बताया कि वर्तमान में देखा जाय तो सहरिया जनजाति के शोषण का प्रमुख कारण अशिक्षा, राजनीति कि समझ का अभाव और घोर अन्धविश्वास है,इस शोध पत्र में लेखक ने सोमा के रूप में ऐसे पात्र की सृष्टि की रचना कि है, जो सहरिया जनजाति को आदिवासी समाज का हिस्सा बताया है, वह अपने समाज के अस्तित्व को लेकर गभीर और चिन्तशील है।
- **शर्मा डी.डी. एवं गुप्ता एम.एल. (2012)** "सामाजिक मानवशास्त्र" पुस्तक मे बताया कि सस्कृति ही मानव की श्रेष्ठतम धरोहर है, जिसकी सहायता से मानव पीढ़ी दर पीढ़ीआगे बढता जा रहा है, प्रगति की ओर उन्मुख होता जा रहा है, यदि मानव से उसकी सस्कृति छिन ली जाय तो जो कुछ शेष रहेगा वह केवल मात्र अन्य पशुओं के समान एक प्राणी ही, माानव आज तक आखेट युग के जंगली यायावरी जीवन से लेकर आज के अन्तरिक्ष युग के स्थाई नगरीय जीवन तक उसकी संस्कृति सदैव उसके साथ रही हैं, मानव ने अपने अब तक के जीवन में जो कुछ सम्पति अर्जित की है, वह संस्कृति ही हैं।
- **शर्मा डी.डी. एवं गुप्ता एम.एल. (2012)** "सामाजिक मानवशास्त्र" पुस्तक मे बताया कि भारत के लगभग सभी जनजातियों में गोत्र पाये

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: February 2024 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

जाते है, पिछड़ी जनजातियों में भी इसकी उपस्थिती देखी जाती है, कई जनजातियों में हमें भ्रातृदल देखने को मिलते है, जबकि अन्य में गोत्र स्वतन्त्र रूप से पाऐ जाते है, व्यक्ति के लिऐ अपने गोत्र एवं भ्रातृदल से बाहर विवाह करना आवश्यक माना जाता है।

- **प्रो.बोयत नेमिचन्द (2014)** इतिहास के आईने में बावरी में बताया कि भारत में रहने वाली ऐसी अनेकों जातियां है जो प्राचीन वर्ण व जाति व्यवस्था के कारण हिन्दू होते हुऐ भी सवर्ण हिन्दूओं द्वारा समाज कि व्यवस्था में नकारी गई है।
- **प्रो.बोयत नेमिचन्द (2014)** इतिहास के आईने में बावरी में बताया कि प्राचीन काल में शासन संचालन एवं रक्षा का कार्य क्षत्रिय वर्ण के लोग ही करतें थे, यह वर्ण प्राचीन भारतीय समाज का एक महत्वपूर्ण अंग था, इस वर्ण के लोगों की संख्या भी खुब थी, गुप्त साम्राज्य के उत्तरवर्ती काल से ही इस वर्ण के लोग सामन्ती व्यवस्था के अर्न्तगत शासन सम्बन्धी कार्यो से जुड़े हुए रहे है।

उदेश्य–

वर्तमान आधुनिकता के कारण बावरी समाज के रीति रिवाज एवं सास्कृतिक विशेषताओं में बदलाव देखने को मिलता है। क्षेत्र विशेष के कारण इस समाज ने भी परिवर्तन कर लिया है, विशेषकर राजस्थान के गंगानगर व हनुमानगढ़ तथा कुछ बीकानेर के साथ–साथ अन्य राज्यो मे निर्वासित राज्यों में भी समाज की कई जातियों में सम्पर्क के कारण इनके मूल रीतिरिवाज, बोलियो में बदलाव देखने को मिलता है। बावरी जाति की कोई एक विशेष भाषा नही है क्योकी यह भाषा अभी अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त नही हो सकी है। अन्य भाषा के सम्पर्क के कारण जैसे पंजाबी भाषा के सर्म्पक के कारण इनकी भाषा के मिले जुले शब्दो को सुना जा सकता हैं। इस प्रकार के शब्दो का प्रयोग पंजाब राज्य से सटे हनुमानगढ व गंगानगर जिले मे देखने को मिलता है। इसी क्रम में भीलवाडा,बाडमेर,सिरोही राज्य में निवास करने वाले इस समाज के लोगो गुजरात राज्य के सम्पर्क के कारण इनकी भाषा में गुजराती शब्द देखने को मिलते है।

शोध का महत्व :–

राजस्थान में बावरी समाज विस्तरित रूप में फैली है, हर क्षेत्र विशेष में जाति की उपजातियां पाई जाती है, इस समाज विशेष ने समय–समय पर राजस्थान की सामाजिक सास्कृतिक सद्भावना एकता को बढ़ावा दिया है, बावरी समाज की बोली में बागड़ी शब्दो की बहुलता है, जो सास्कृतिक सौहार्द जैसा माहौल विकसित करती है, बावरी समाज की कोई एक विशेष भाषा नहीं है, क्योकि यह भाषा अभी अपनी सम्पूर्ण को प्राप्त नहीं कर सकी, इसलिऐ इस बोली में साहित्य न के बराबर है, इस तरह हम कह सकते है कि अन्य बोलियो के सम्पर्क के कारण बावरी समाज की बोली में परिवर्तन मिलता है।

बावरी समाज के लोग अपनी सस्कृति के लिऐ जाने जाते हैं। इस आधूनिक दौर में भी यह जाति अपनी संस्कृति रीतिरिवाज को पारम्परिक तरीके से जीती है, अपने समुदाय कि ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि व सांस्कृतिक परम्परा के लिए इनका मोह और विश्वास अद्विितिय है, इसी कारण इसकी सांस्कृतिक परम्पराओं रीतिरिवाजो को बनाये रखने के लिय एंव लिखित ग्रन्थ के रूप में लाने के लिये आवश्यकता महसुस हुई। हालांकि पहले भी इस प्रकार की कोशिश की गई भी जिसमें अजय बावरीया,नेमीचंद बोयत आदि ने प्रयास किया। इस प्रयास की बदोलत आप कुछ सम्मान बावरी जाति को मिला हुआ है।

बावरी जाति समाज पर आज तक प्रमाणित ग्रन्थ नही मिलता है। छुटपुट लिखित साक्ष्य मिले है। इन्ही छुटपुट साक्ष्यों के आधार पर ही एव साक्षात्कार माध्यम से इनकी जानकारी मिलती है। पत्र,पत्रिकाओ कें आधार पर भी इनकी सामाजिकता एव सास्कृतिकता का पता चलता है। हालांकि आज इस जाति के अपनी पहचान पूरी राजस्थान में अच्छी बना ली है। बावरी जाति के लोग स्वाभिमानी माने जाते है यह अपने त्यौहार,पर्व विवाह पारम्परिक तरीके से करती है। ऐसा दुसरी जातियो मे बहुत कम देखने को मिलता है। इसी सांस्कृतिकता को लिखित रूप में लिपिबध करने की आवश्यकता आन पडी है।

बावरी जाति के लोग अधिकांश कबीले के रूप में एक साथ रहते है। इनका मुख्य व्यवसाय कृषि है। कुछेक कर्मचारी भी है तथा अल्प रूप में व्यवसायी भी है। यह जाति एक दुसरे से बात करने के लिए अपनी स्थानीय बाली का ही प्रयोग करना उचित समझते हैं। क्षेत्र विशेष के अनुसार इनकी स्थनीय बोली मैं अन्तर देखने को मिलता है। कुछेक शब्दो के हेरफेर के साथ एक नई बोली विकसित कर लेते है। इस कारण इस समाज में बहुत सारी छोटी छोटी बोलिया विकसित हो रही है। कही कही अन्य बोली के संपर्क के कारण इनकी मूल बोली मैं अन्य बोली के शब्द आ जाते है। हालांकि ऐसा हर बोली के साथ होता है। लेकिन इस समाज मै छोटी छोटी अपने स्तर की अनेक बोलिया क्षेत्र विशेष के

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: February 2024 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

अनुसाार मिल जाती है जिससे इनकी सांस्कृतिकता पर प्रभाव पडता है।
बावरी समाज के लोक देवता व लोक देवियां का संस्कृति व समाज पर प्रभाव

उदेश्य :–

1. बावरी समाज के लोक देवता का अध्ययन करना।
2. बावरी समाज के लोक देवियों का अध्ययन करना।
3. बावरी समाज के लोक देवता व लोक देवियां का संस्कृति व समाज पर प्रभाव का अध्ययन करना

परिकल्पना :–

1. बावरी समाज की संस्कृति में इनका बहुत बड़ा योगदान है।
2. बावरी समाज के रीति रिवाज व परम्पराओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
3. बावरी समाज की भाषा व बोलीयों का बड़ा रोल अदा किया है।

बावरी समाज राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश व अन्य उत्तर–पश्चिमी भारतीय राज्यों में निवास करने वाला एक परंपरागत समुदाय है। इस समाज की संस्कृति, परंपराएं व धार्मिक मान्यताएं स्थानीय लोक–परंपराओं से गहराई से जुड़ी हुई हैं। बावरी समाज के लोग कई लोक देवताओं और लोक देवियों की पूजा करते हैं, जो उनके जीवन, खेती–बाड़ी, रक्षा व सामाजिक न्याय से संबंधित होते हैं।

बावरी समाज के प्रमुख लोक देवता और देवियों निम्न प्रकार से हैं

- लोक देवता (पुरुष देवता)बाबा रामदेवजी

  विष्णु के अवतार माने जाते हैं। बावरी समाज सहित अनेक जातियाँ इनकी पूजा करती हैं। रामदेवरा (जैसलमेर) इनका प्रमुख स्थान है।

- गोगाजी (गोगा वीर)

  नाग देवता के रूप में पूजे जाते हैं। सर्पदंश से रक्षा करने वाले माने जाते हैं। गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) इनका प्रमुख स्थान है।

- पाबूजी

  मारवाड़ के राठौड़ योद्धा। पशु रक्षा व वीरता के प्रतीक माने जाते हैं। लोकगीतों व फड़ चित्रकला में इनकी गाथाएं प्रसारित होती हैं।

- तेजाजी

  सर्पों के देवता। किसान व पशुपालकों में विशेष श्रद्धा है। इनकि तेजा दशमी को विशेष पूजा होती है।

- मल्लीनाथजी

  जैसलमेर और बाड़मेर क्षेत्र में पूजे जाते हैं। मारवाड़ के रक्षक देवता माने जाते हैं।

- हरभूजी

स्थानीय रूप से पूजित योद्धा देवता। बावरी समाज के कई गाँवों में स्थान।

लोक देवियां

- करणी माता

  देशनोक (बीकानेर) में इनका प्रसिद्ध मंदिर है। शक्ति की प्रतीक। चूहों के साथ सम्बन्धित मंदिर प्रसिद्ध है।

- कालिका माता

  शक्ति रूप में पूजी जाती हैं। गाँव–गाँव में इनका स्थान होता है। विशेष रूप से नवरात्रों में पूजा होती है।

- हिंगलाज माता

  सिंध (अब पाकिस्तान) में मूल स्थान। बावरी समाज के कुछ समूह अब भी इन्हें मानते हैं।

जसोल की राणी भटियाणी माता

- जसोल (बाड़मेर) में प्रसिद्ध मंदिर। लोक आस्था की देवी।

सामान्य विशेषताएँ

बावरी समाज लोक देवताओं को परंपरागत गीत, फड़, कथा–वाचन, भजन, और मेलों के माध्यम से स्मरण करता है। इन देवताओं की पूजा मुख्यतः श्रद्धा, संकीर्तन, और सामुदायिक भोज के माध्यम से की जाती है। लोक देवता व लोक देवियां का संस्कृति व समाज पर प्रभाव गहरा, व्यापक और बहुआयामी होता है। राजस्थान व आसपास के क्षेत्रों में रहने वाले बावरी समाज जैसे परंपरागत समुदायों की सांस्कृतिक पहचान, सामाजिक संरचना, रीति–रिवाज और जीवन–मूल्यों में इन लोक देवताओं और देवियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नीचे इनके प्रभाव को विभिन्न पहलुओं में समझाया गया है।

1. सांस्कृतिक प्रभाव

लोक परंपराओं को जीवंत बनाए रखना, लोक देवताओं की कथाओं को गीत, फड़, कथा, नृत्य और लोक–नाटकों के माध्यम से पीढ़ी दर पीढ़ी संजोया गया है। पाबूजी की फड़, तेजाजी के गीत, और रामदेवजी के भजन संस्कृति की पहचान बन चुके हैं।

स्थानीय कला व शिल्प को बढ़ावा

लोक देवताओं के चित्रण में मांडण, फड़ चित्रकला, पपेट शो (कठपुतली) और भोपाओं की प्रस्तुति जैसी कला–शैलियाँ विकसित हुईं।

"Arthvishwa" International Journal
Multidisciplinary, Peer Reviewed, Indexed, Refereed, International Journal ISSN: 2319-6289
Published Month and Year: February 2024 (Ref. No.: NSL/ISSN/INF/2012/2476 Dated: October 19, 2012)

2. धार्मिक और आध्यात्मिक प्रभाव

भक्ति व आस्था का संबल, समाज को एकता व सांस्कृतिक गर्व का अनुभव होता है। नवरात्र, रामदेव एकादशी, तेजा दशमी जैसे त्योहार पूरे समुदाय को जोड़ते हैं।

लोक आधारित धर्मशास्त्र

लोक देवता शास्त्रों से बाहर के लेकिन जनता के हृदय में बसे हुए देवता हैं जिनमें सीधा संवाद व लोक अनुभव की प्रधानता है।

3. सामाजिक संगठन और एकता

सामुदायिक मेलजोल को प्रोत्साहन, लोक देवताओं के मेलों और यात्राओं से समाज एकत्रित होता है जैसे रामदेवरा यात्रा। इससे जातीय एकता, आपसी सहयोग और सामूहिक निर्णय प्रणाली को बल मिलता है।

समानता व न्याय का संदेश

तेजाजी, गोगाजी जैसे लोकदेवता सामाजिक न्याय, गरीबों की रक्षा, और पशु–कल्याण के प्रतीक माने जाते हैं। बावरी समाज जैसे पिछड़े वर्गों को इनसे सांस्कृतिक आत्मविश्वास मिलता है।

4. सामाजिक सुधार में भूमिका

कुरीतियों से विरोध

कई लोक देवताओं की कथाओं में कुप्रथाओं, अत्याचार और धार्मिक पाखंड का विरोध दिखाया गया है। ये कथाएँ समाज को मानवता, साहस, और त्याग का संदेश देती हैं।

स्त्री शक्ति का सम्मान

करणी माता, भटियाणी माता जैसी लोक देवियां नारी शक्ति का प्रतीक हैं। इससे समाज में स्त्री सम्मान की भावना को बल मिलता है।

5. पर्यावरण व पशु–पक्षी संरक्षण

गोगाजी और पाबूजी जैसे देवताओं को पशु रक्षक माना जाता है। बावरी समाज जैसे समुदायों में इनकी पूजा से पशुओं के प्रति करुणा, वृक्ष पूजन, और प्राकृतिक संतुलन की परंपरा पनपी है।

निष्कर्ष

लोक देवता और देवियां न केवल धार्मिक आस्था के केंद्र हैं, बल्कि वे बावरी समाज जैसे समुदायों की सांस्कृतिक, सामाजिक, नैतिक और पारिस्थितिक संरचना की रीढ़ भी हैं। वे जनसामान्य की पीड़ा, आकांक्षा, वीरता और प्रेम की कहानियाँ अपने भीतर समेटे हुए हैं। इसलिए इनका प्रभाव केवल पूजा तक सीमित नहीं, बल्कि यह सम्पूर्ण जीवनशैली और सामूहिक चेतना को प्रभावित करता है।

जिसमें लोक देवता व देवियों, उनसे जुड़ी मान्यताएं, और उनका बावरी समाज व संस्कृति पर प्रभाव – बावरी समाज के लोक देवता–देवियां मान्यताएं व सामाजिक प्रभाव सारणी

क्रम	लोक देवता व देवी	प्रमुख मान्यताएं	मान्यताएंसमाज व संस्कृति पर प्रभाव
1	रामदेवजी	विष्णु के अवतार	सभी जातियों के रक्षक जातीय समरसता, भक्ति परंपरा, रामदेवरा यात्रा से एकता
2	गोगाजी	नाग देवता, सर्पदंश से रक्षा	पशु रक्षा की भावना, नाग पूजा, लोक गीतों व मेलों की परंपरा
3	तेजाजी वीर	योद्धा, पशुओं व गरीबों के रक्षक	साहस, सत्यनिष्ठा, सामाजिक न्याय व किसान चेतना
4	पाबूजी	प्रेमी व रक्षक योद्धा	लोक कथा–फड़ कला का विकास, लोक संगीत में योगदान
5	करणी माता	अवतारी देवी,	चमत्कारी शक्ति नारी शक्ति की प्रतिष्ठा, श्रद्धा व परंपरा का केंद्र
6	भटियाणी माता	जसोल की वीर पत्नी आत्मबल की प्रतीक	स्त्री–त्याग व सम्मान का प्रतीक, मेलों में सामाजिक एकजुटता
7	मल्लीनाथजी	राठौड़ कुल के वीर व धर्मनिष्ठ राजा	समाज में धर्मपालन, न्याय व वीरता की प्रेरणा
8	हरभूजी	ग्राम रक्षक देवता	ग्राम रक्षा, लोक विश्वास, सामूहिक पूजन परंपरा

9	कालिका माता	शक्ति की देवी, रक्षण व संहार की प्रतीक	नवरात्र पूजन, नारी शक्ति का सम्मान, देवी जागरण

विशेष टिप्पणियाँ

यह चार्ट राजस्थान केंद्रित बावरी समाज की दृष्टि से तैयार किया गया है। मान्यताएं स्थानीय विविधताओं के अनुसार बदल सकती हैं, जैसे किसी गाँव में हरभूजी को विशेष रूप से पूजते हैं। यह चार्ट विद्यार्थियों, शोधार्थियों और लोक–संस्कृति में रुचि रखने वालों के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोगी है।

बावरी समाज की संस्कृति व लोक परंपरा आज संक्रमण काल से गुजर रही है। जहां एक ओर सामाजिक सुधार और जागरूकता ने इनके जीवन में सकारात्मक बदलाव लाए हैं, वहीं दूसरी ओर पारंपरिक सांस्कृतिक विरासत के लुप्त होने का खतरा भी मंडरा रहा है। आवश्यकता है संतुलन की कृ जहाँ आधुनिक जीवनशैली को अपनाते हुए भी अपनी सांस्कृतिक पहचान को संरक्षित किया जाए। बावरी समाज की लोक परंपराएं उनकी सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ी हुई हैं। ये परंपराएं केवल धार्मिक या सामाजिक रीति–रिवाज नहीं हैं, बल्कि उनके जीवन का तरीका, उनका ज्ञान और उनका दर्शन भी हैं। आज आधुनिकता के प्रभाव में ये परंपराएं संकट में हैं,

संदर्भ ग्रन्थ–

- ✓ कर्दभ, डॉ. जयप्रकाश, ईक्कीसवी शदी में दलित आन्दोलन, पंकज पुस्तक मन्दिर दिल्ली, पृ–. 200 भुमिका से
- ✓ **कुमारी मोनिका (2019)** "राही मासुम रजा के आधा गांव उपन्यास मे दलित विमर्श" शोध श्री, अंक –1,आई.एस.एस.एन. 0974–7958, 2019 पृ.स. 30–32.
- ✓ **जेना कुमार विक्रम व प्रसाद देवी (2021)** "लांजिया सौरा जनजाति में सामाजिक सांस्कृतिक परिवर्तनः एक सारगर्भित विश्लेषण" मेकल मीमांसा, वर्ष–13, अंक–02,आई.एस.एस.एन. 0974–0118, 2021, पृ.स. 58–67.
- ✓ **जैन हुकम चन्द एवं माली नारायण लाल (2022)** "राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, आई.एस.बी.एन. 978–93–94685–11–6, 32 वां संस्करण, पृ.स. 160–190.
- ✓ **जैन हुकम चन्द एवं माली नारायण लाल (2022)** "राजस्थान का इतिहास, संस्कृति, परम्परा एवं विरासत" राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, आई.एस.बी.एन. 978–93–94685–11–6, 32 वां संस्करण, पृ.स. 405–416.
- ✓ जैन हुकम चन्द एव माली नारायण लाल, राजस्थान का इतिहास,सस्कृति,परम्परा एव विरासत,राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी,आई.एस.बी.एन. 978–81–948052–3–6,पृ.360.
- ✓ **जैतली अजय कुमार एव कुशवाहा पूजा 2013** भारत मै जनजाति समाज एव उनकी कलाए अपनी माटी सस्थान चितौडगढ,आई एस एस एन 2322–0724, पृष्ट संख्या 1–2
- ✓ **डॉ. सैन कुमार राजेन्द्र (2019)** "बागड़ी समाज के रीति–रिवाज व विभिन्न रस्में" शोध श्री, अंक –1,आई.एस.एस.एन. 0974–7958, 2019 पृ.स. 33–45.